''मीठे बच्चे – अब विदेही बनने का अभ्यास करो, अपनी इस विनाशी देह से प्यार निकाल एक शिवबाबा को प्यार करो''

प्रश्नः- इस बेहद की पुरानी दुनिया से जिन्हें वैराग्य आ चुका है उनकी निशानी क्या होगी?
उत्तरः- वह इन आंखों से जो कुछ देखते हैं – वह देखते हुए भी जैसे नहीं देखेंगे। उनकी बुद्धि में यह होगा कि यह सब खत्म होना है। यह सब मरे पड़े हैं। हमको तो शान्तिधाम, सुखधाम में जाना है। उनका ममत्व मिटता जायेगा। योग में रहकर किससे बात करेंगे तो उन्हें भी कशिश होगी। ज्ञान का नशा चढ़ा हुआ होगा।

गीतः- ओम् नमो शिवाए...

ओम् शान्ति। बाप कहते हैं – मीठे बच्चे तुम शिवबाबा को जान गये हो। फिर यह गीत गाना तो जैसे भक्ति मार्ग का हो जाता है। भक्ति मार्ग वाले शिवाए नमः भी कहते हैं, मात-पिता भी कहते हैं, परन्तु जानते नहीं हैं। शिवबाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए। तुम बच्चों को तो बाप मिला है, उनसे वर्सा मिल रहा है इसलिए बाप को याद करते हो। तुमको शिवबाबा मिला है, दुनिया को नहीं मिला है। जिनको मिला है वह भी अच्छी रीति चल नहीं सकते। बाबा के डायरेक्शन बड़े मीठे हैं, आत्म-अभिमानी भव, देही-अभिमानी भव। बात ही आत्माओं से करते हैं। देही-अभिमानी बाप, देही-अभिमानी बच्चों से बात करते हैं। वह तो एक ही है। सो तो मधुबन में तुम बच्चों के साथ बैठा है। तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर बाप आये ही हैं पढ़ाने। यह पढ़ाई सिवाए शिवबाबा के कोई पढ़ा न सके। न ब्रह्मा, न विष्णु। यह तो बाप ही आकर पतितों को पावन बनाते हैं, अमरकथा सुनाते हैं। सो भी यहाँ ही सुनायेंगे ना। अमरनाथ पर तो नहीं सुनायेंगे ना। यही अमरकथा सत्य नारायण की कथा है। बाप कहते हैं – मैं तुमको सुनाता तो यहाँ ही हूँ। बाकी यह सब हैं भक्ति मार्ग के धक्के। सर्व का सद्गति दाता राम एक निराकार ही है। वही पतित-पावन, ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। वह आता ही तब है जब विनाश का समय होता है। सारे जगत का गुरू तो एक परमपिता परमात्मा ही हो सकता है। वह निराकार है ना। देवताओं को भी मनुष्य कहा जाता है। परन्तु वह दैवीगुणों वाले मनुष्य हैं इसलिए उनको देवता कहा जाता है। तुमको अभी ज्ञान मिला है। ज्ञान मार्ग में अवस्था बड़ी मजबूत रखनी है। जितना हो सके बाप को याद करना है। विदेही बनना है। फिर देह से प्यार ही क्यों करें! बाबा तुमको कहते हैं शिवबाबा को याद करो फिर इनके पास आओ। मनुष्य तो समझते हैं यह दादा से मिलने जाते हैं। यह तो तुम जानते हो शिवबाबा को याद कर हम उनसे मिलते हैं। वहाँ तो हैं ही निराकारी आत्मायें, बिन्दी। बिन्दी से तो मिल न सकें। तो शिवबाबा से कैसे मिलेंगे इसलिए यहाँ समझाया जाता है, हे आत्मायें अपने को आत्मा समझ बुद्धि में यह रखो कि हम शिवबाबा से मिलते हैं। यह तो बड़ा गुह्य राज़ है ना। कइयों को शिवबाबा की याद नहीं रहती है। बाबा समझाते हैं हमेशा शिवबाबा को याद करो।

शिवबाबा आपसे मिलने आते हैं। बस आपके बने हैं। शिवबाबा इसमें आकर ज्ञान सुनाते हैं। वह भी निराकार आत्मा है, तुम भी आत्मा हो। एक बाप ही है जो बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। सो तो बुद्धि से याद करना है। हम बाप के पास आये हैं। बाबा इस पतित शरीर में आये हैं। हम सामने आने से ही निश्चय कर देते हैं, शिवबाबा हम आपके बने हैं। मुरलियों में भी यही सुनते हो – मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे।

तुम जानते हो यह वही पतित-पावन बाप है। सच्चा-सच्चा सतगुरू वह है। अब तुम पाण्डवों की है परमपिता परमात्मा से प्रीत बुद्धि। बाकी सभी की तो कोई न कोई के साथ विपरीत बुद्धि है। शिवबाबा के जो बनते हैं उन्हों को तो खुशी का पारा बड़ा जोर से चढ़ा रहना चाहिए। जितना समय नजदीक आता है, उतनी खुशी होती है। हमारे अब 84 जन्म पूरे हुए। अब यह अन्तिम जन्म है। हम जाते हैं अपने घर। यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी है, इसमें क्लीयर है। तो बच्चों को सारा दिन बुद्धि चलानी चाहिए। चित्र बनाने वालों को तो बहुत विचार सागर मंथन करना है, जो हेड्स हैं उन्हों का ख्याल चलना चाहिए। तुम तो चैलेन्ज देते हो – सतयुगी श्रेष्ठाचारी दैवी राज्य में 9 लाख होंगे। कोई बोले इसका क्या प्रूफ है? कहो यह तो समझ की बात है ना। सतयुग में झाड़ होगा ही छोटा। धर्म भी एक है तो जरूर मनुष्य भी थोड़े होंगे। सीढ़ी में सारी नॉलेज आ जाती है। जैसे यह कुम्भकरण वाला चित्र है। तो यह ऐसा बनाना चाहिए – बी.के. ज्ञान अमृत पिलाती हैं, वे विष (विकार) मांगते हैं। बाबा मुरली में सब डायरेक्शन देते रहते हैं। हर एक चित्र की समझानी बड़ी अच्छी है। लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर बोलो – यह भारत स्वर्ग था, एक धर्म था तो कितने मनुष्य होंगे। अब कितना बड़ा झाड़ हो गया है। अब विनाश होना है। पुरानी सृष्टि को बदलने वाला एक ही बाप है। 4-5 चित्र हैं मुख्य – जिससे किसको धक से तीर लग जाए। ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइंट्स गुह्य होती जाती हैं। तो चित्रों में भी चेंज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेंज होती है। आगे यह थोड़ेही समझते थे कि शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि पहले ऐसा क्यों नहीं बताया। बाप कहते हैं – सब बातें पहले ही थोड़ेही समझाई जाती हैं। बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते ही रहेंगे। करेक्शन होती रहेगी। पहले से ही थोड़ेही बता देंगे। फिर आर्टीफिशयल हो जाए। अचानक कोई इतफाक आदि होते रहेंगे फिर कहेंगे ड्रामा। ऐसे नहीं यह नहीं होना चाहिए। मम्मा को तो पिछाड़ी तक रहना था, फिर मम्मा क्यों चली गई। ड्रामा में जो हुआ सो राइट। बाबा ने भी जो कहा सो ड्रामा अनुसार कहा। ड्रामा में मेरा पार्ट ऐसा है। बाबा भी ड्रामा पर रख देते हैं। मनुष्य कहते हैं ईश्वर की भावी। ईश्वर कहते हैं ड्रामा की भावी। ईश्वर ने बोला या इसने बोला, ड्रामा में था। कोई उल्टा काम हुआ ड्रामा में था, फिर सुल्टा हो जायेगा। चढ़ती कला जरूर है। चढ़ाई पर जाते हैं, कब डगमग हो जाते हैं। यह सब माया के तूफान हैं। जब तक माया है विकल्प जरूर आयेंगे। सतयुग में माया ही नहीं तो विकल्प की बात ही नहीं। सतयुग में कभी कर्म विकर्म नहीं होते। बाकी थोड़े रोज़ हैं, खुशी रहती है। यह हमारा अन्तिम जन्म है। अब अमरलोक में जाने के लिए शिवबाबा से अमरकथा सुनते हैं। यह बातें तुम ही समझते

हो। वो लोग कहाँ-कहाँ अमरनाथ पर जाकर धक्के खाते रहते हैं। यह नहीं समझते कि पार्वती को कथा किसने सुनाई? वहाँ तो शिव का चित्र दिखाते हैं। अच्छा शिव किसमें बैठा? शिव और शंकर दिखाते हैं। क्या शिव ने शंकर में बैठ कथा सुनाई? कुछ भी समझते नहीं हैं, भक्ति मार्ग वाले अभी तक तीर्थ करने जाते रहते हैं। कथा भी वास्तव में बड़ी नहीं है। असुल है मनमनाभव। बस, बीज को याद करो। ड्रामा के चक्र को याद करो। जो ज्ञान बाबा के पास है वह ज्ञान हमारी आत्मा में भी है। वह भी ज्ञान सागर, हम आत्मा भी मास्टर ज्ञान सागर बनते हैं। नशा चढ़ना चाहिए ना। वह हम भाइयों (आत्माओं) को सुनाते हैं। सुनायेंगे तो शरीर द्वारा ही। इसमें संशय नहीं लाना चाहिए। बाप को याद करते-करते सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे, ममत्व मिटता जायेगा। कोई का नाम-मात्र प्यार होता है। हमारा भी ऐसा है। अभी तो हम जाते हैं सुखधाम। यह तो जैसे सब मरे पड़े हैं, इनसे दिल क्या लगानी है। शान्तिधाम में जाकर फिर सुखधाम में आकर राज्य करेंगे। इसको कहा जाता है पुरानी दुनिया से वैराग्य। बाप कहते हैं – इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सब खत्म हो जाने का है। विनाश के बाद स्वर्ग को देखेंगे। अब तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना चाहिए। योग में रह कोई बात करेंगे तो उनको बड़ी कशिश होगी। यह ज्ञान ऐसा है जो बाकी सब भूल जाता है। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- ज्ञान मार्ग में अपनी अवस्था बहुत मजबूत बनानी है। विदेही बनना है। एक बाप से ही सच्ची-सच्ची प्रीत रखनी है।

२- ड्रामा की भावी पर अडोल रहना है। ड्रामा में जो हुआ सो राइट। कभी डगमग नहीं होना है, किसी भी बात में संशय नहीं लाना है।

वरदान:- देह-अभिमान के मैं पन की सम्पूर्ण आहुति डालने वाले धारणा स्वरूप भव

जब संकल्प और स्वप्न में भी देह-अभिमान का मैं पन न हो, अनादि आत्मिक स्वरूप की स्मृति हो। बाबा-बाबा का अनहद शब्द निकलता रहे तब कहेंगे धारणा स्वरूप, सच्चे ब्राह्मण। मैं पन अर्थात् पुराने स्वभाव, संस्कार रूपी सृष्टि को जब आप ब्राह्मण इस महायज्ञ में स्वाहा करेंगे तब इस पुरानी सृष्टि की आहुति पड़ेगी। तो जैसे यज्ञ रचने के निमित्त बने हो, ऐसे अब अन्तिम आहुति डाल समाप्ति के भी निमित्त बनो।

स्लोगन:-

स्वयं से, सेवा से और सर्व से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट लेना ही सिद्धि स्वरूप बनना है।

दादी प्रकाशमणि जी के चौथे पुण्य स्मृति दिवस पर बापदादा को भोग तथा वतन का सन्देश – गुल्जार दादी

आज हम आप सबसे मिलते हुए वतन में पहुंची। तो वतन में बाबा ने एडवांस पार्टी को अपने पास बुलाया था और उसमें भी मुख्य तीन दादियां, दादी, दीदी और चन्द्रमणि दादी, यह तीन जो हैं वह बाबा के सामने बैठी थी और बाबा इन्हों से पूछ रहा था कि आपके मन में अभी विशेष क्या चलता है? तो सभी मुस्करा रहे थे। तो दादी से खास बाबा ने पूछा कि आपके मन में क्या संकल्प चलता है? तो दादी ने कहा कि बाबा हमने नहीं समझा था कि इतना समय एडवांस पार्टी में रहेंगे। हम समझते हैं कि अभी जल्दी होना चाहिए। चन्द्रमणि दादी और दीदी ने कहा कि बाबा हम लोगों को तो साकार का अनुभव है, तो प्लैन बहुत अच्छे बनाते हैं लेकिन प्लेन बुद्धि बनें, इसकी आवश्यकता है। तो दीदी ने कहा कि बाबा हम भी समझते हैं कि जल्दी होना चाहिए, लेकिन कमी यह है जो प्लैन बहुत अच्छे बनाते हैं, धारणा के भी प्लैन बनाते हैं, उमंग-उत्साह में भी बहुत अच्छे आते हैं, वायदा भी अच्छे करते हैं, यह करेंगे, यह करेंगे.. सोचते भी हैं, उस समय इन्हों का दिमाग ऐसे चलता है कि कुछ करके ही छोड़ना है लेकिन फिर कोई न कोई छोटी-छोटी बातें हरेक को विघ्न डालती हैं। तो बाबा ने कहा फिर आप लोग क्या करते हैं? तो दादियों ने कहा कि बाबा आपने हमको तो बच्चा बना दिया है। हमको तो उनके आगे बच्चे रूप में ही रहना पड़ता है लेकिन जब हम आपके पास वतन में इमर्ज होते हैं तो हमको संकल्प आता है कि इन्हों से बाबा कोई न कोई संकल्प दृढ़ करावे। हमने समाचार सुनाया कि आज मधुबन में इतनी सब टीचर्स आई हैं। तो दादियों ने बाबा को कहा कि बाबा इन्हों से दृढ़ संकल्प कराओ, हर एक स्वयं को देखे कि मेरे पुरुषार्थ में क्या कमी है। जानते हुए भी कहते हैं यह तो चलता ही है, कौन सम्पूर्ण बना है, अभी तो पुरुषार्थी हैं... ऐसे सोचकर डोंट केयर हो जाते हैं। तो यह जो संस्कार है अब इसे मिटायें। तो बाबा ने उनसे पूछा कि आप लोग इसके लिए क्या करते हो? तो कहा हम जब 4 बजे आते हैं तो आपसे मिलते हैं। आपसे भविष्य में क्या करना है उसकी प्रेरणा मिलती है, उसके लिए ताकत लेते हैं लेकिन हमारा यहाँ संकल्प बहुत चलता है कि आखिर यह कब तक होगा!

तो बाबा ने कहा कि आप सभी का अगर बाबा से, दादियों से प्यार है तो जिससे प्यार होता है उस पर कुर्बान जरूर होते हैं। तो आज हर एक अपनी गलती को स्वयं समझें और परिवर्तन करे। अगर दूसरा कोई कहता है तो पुराना स्वभाव इमर्ज हो जाता है। लेकिन अपने आपको साक्षी होकर देखे कि मेरे में क्या कमी है! ऐसे नहीं कि यह तो सब चलता है, सब होता है.. ऐसे न करके हर एक समझे कि मुझे बाबा का कहना मानना है। मैं एक दो को न देखूं। बाबा से प्यार है उसमें तो सभी दो दो हाथ उठाते हैं। तो जब बाबा से प्यार है, तो बाबा जो कहता है उससे भी तो प्यार होना चाहिए ना। बाबा को तरस भी आता है कि इस बच्चे का जो विघ्न है, उसको किसी भी रीति से खत्म कर दूं, लेकिन यह बाबा कर नहीं सकता। बाबा सकाश देगा, मदद करेगा लेकिन करना तो उसको पड़ेगा ना। तो बाबा ने कहा कि अभी देखो आपकी दुनिया में क्या चल रहा है? दृढ़ता ही चल रही है ना। मरे तो मरे, लेकिन जो कहा है वह करना ही है। वह मरने के लिए तैयार हैं, आप जीते जी मरने के लिए तैयार हो जाओ। जो भी कमी है उसको खत्म करना ही है, यह दृढ़ संकल्प चाहिए। तो तीनों दादियों ने कहा बाबा हम भी अमृतवेले यहाँ आकरके इसके लिए विशेष 10 मिनट का योग करेंगे, जिससे हमारे साकार में जो साथी हैं, जिनको करना है, वह जल्दी से जल्दी अपनी कमी खत्म करके समान बन जाएं। आज तीनों दादियां इतने उमंग में थी, जो तीनों के हाथ उठ रहे थे कि बाबा यह ऐसे करें, ऐसे करें... तो बाबा ने कहा कि बच्चों को सुना देना कि दादियां क्या चाहती हैं! दादियों से प्यार है तो प्यार का रेसपान्ड है, जो कहा वह करें। तो यह अटेन्शन देकर अपने से यह प्रण करो। लिखकर तो देते हैं लेकिन चिटकी चिटकी रह जाती है और गलती चिपकी ही रहती है, खत्म नहीं होती है। तो बाबा ने कहा कि यह जो ग्रुप आया है यह कर सकता है। छोटे भी सुभानअल्ला होते हैं। तो यह ग्रुप ऐसा जलवा दिखाये कि बाबा हम करके समय को समीप लाकर ही दिखायेंगे।

फिर बाबा ने सभी एडवांस पार्टी वालों को सामने बुलाया और सबको कहा कि अभी आप भी समझो कि हमें भी इन्हों को सकाश देनी है। अभी यह मन्सा सेवा करो, आप ब्राह्मण भी ब्राह्मणों को सकाश दो जो इनके मन में बुराई से ऐसी घृणा आ जाये जैसे कोई किचड़ा मैं उठा रही हूँ।

ऐसे कहते बाबा ने कहा देखो आज दादी के प्रति कितना भोग आया है। दादी से सभी का विशेष प्यार है ना! दादी से प्यार करते हैं तो आप सबकी भी याद आती है। तो बाबा ने कहा अभी दीदी सबको भोग खिलावे, तो सब प्रकार का भोग थोड़ा-थोड़ा दीदी ने सबको खिलाया। दादी भी साथ में थी। अच्छा - ओम् शान्ति।